ॐ श्री गणेशाय नमः ॐ
ॐ श्री हनुमते नमः ॐ
वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम ॥१॥
मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥२॥

१. अर्जुनविषादयोग

धृतराष्ट्र बोले – हे संजय, धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में एकत्र हुए युद्ध के इच्छुक मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या-क्या किया? (१.०१)

संजय बोले – पाण्डवों की सेना की व्यूह-रचना देखकर राजा दुर्योधन ने द्रोणाचार्य के पास जाकर कहा— (१.०२)

हे आचार्य, अपने बुद्धिमान शिष्य धृष्टद्युम्न द्वारा व्यूहाकार खड़ी की गयी पाण्डु पुत्रों की इस महान् सेना को देखिए. (१.०३)

इस सेना में महान् धनुर्धारी योद्धा हैं, जो युद्ध में भीम और अर्जुन के समान हैं; जैसे युयुधान, विराट तथा महारथी राजा द्रुपद, धृष्टकेतु, चेकितान, बलवान काशिराज, पुरुजित, कुन्तिभोज और मनुष्यों में श्रेष्ठ शैब्य, पराक्रमी युधामन्यु, बलवान उत्तमौजा, सुभद्रापुत्र अभिमन्यु और द्रौपदी के पुत्र, ये सब महारथी हैं. (१.०४-०६)

हे द्विजोत्तम, हमारे पक्ष में भी जो विशिष्ट योद्धागण हैं, उनको भी आप जान लीजिये. आपकी जानकारी के लिए मैं अपनी सेना के नायकों के नाम बताता हूं. (१.०७)

एक तो स्वयं आप, भीष्म, कर्ण और विजयी कृपाचार्य तथा अश्वत्थामा, विकर्ण और सोमदत्त का पुत्र हैं. मेरे लिए प्राणत्याग करने के लिए तैयार, अनेक प्रकार के शस्त्रों से सुसज्जित तथा युद्ध में कुशल और भी अनेक शूरवीर हैं. (१.०८-०९)

भीष्मपितामह द्वारा रक्षित हमारी सेना अजेय है और भीम द्वारा रक्षित उनकी सेना जीतने में सुगम है. अतः विभिन्न मोर्चों पर अपने-अपने स्थान पर स्थित रहते हुए आप सब लोग भीष्मपितामह की ही सब ओर से रक्षा करें. (१.१०-११)

उस समय कौरवों में वृद्ध, प्रतापी भीष्मपितामह ने दुर्योधन के मन में हर्ष उत्पन्न करते हुए उच्च स्वर से गरज कर शंखध्वनि की. (१.१२)

तत्पश्चात् शंख, नगाड़े, ढोल, शृंगी आदि वाद्य एक साथ ही बज उठे, जिनका बड़ा भयंकर नाद हुआ. (१.१३)

इसके उपरान्त श्वेत अश्वों से युक्त भव्य रथ में बैठे हुये श्रीकृष्ण और पाण्डुपुत्र अर्जुन ने भी अपने-अपने दिव्य शंख बजाये. (१.१४)

भगवान कृष्ण ने पांचजन्य, अर्जुन ने देवदत्त तथा भयंकर कर्म करने वाले भीम ने पौण्ड्र नामक महाशंख बजाये. (१.१५)

हे राजन्, कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिर ने अनन्त विजय नामक शंख और नकुल तथा सहदेव ने क्रमशः सुधोष और मणिपुष्पक नामक शंख बजाये. श्रेष्ठ धनुष वाले काशिराज, महारथी शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, राजा विराट, अजेय सात्यकि, राजा द्रुपद, द्रौपदी के पुत्र और महाबाहु अभिमन्यु ने अलग-अलग शंख बजाये. (१.१६-१८)

वह भयंकर धोष आकाश और पृथ्वी पर गूंजने लगा और उसने आपके पुत्रों के हृदय विदीर्ण कर दिये. (१.१९)

हे राजन्, इस प्रकार जब युद्ध प्रारम्भ होने वाला ही था कि कपिध्वज अर्जुन ने धृतराष्ट्र के पुत्रों को स्थित देखकर धनुष उठाकर भगवान कृष्ण से ये शब्द कहे — हे अच्युत, मेरे रथ को दोनों सेनाओं के मध्य में खड़ा कीजिए; जिससे मैं युद्ध की इच्छा से खड़े उन लोगों का निरीक्षण कर सकूं, जिनके साथ मुझे युद्ध करना है. (१.२०-२२)

दुर्बुद्धि दुर्योधन का युद्ध में प्रिय चाहने वाले जो राजा लोग यहां एकत्र हैं, उन युद्ध करने वालों को मैं देखना चाहता हूं. (१.२३)

संजय बोले— हे भारत, अर्जुन के इस प्रकार कहने पर भगवान कृष्ण ने दोनों सेनाओं के बीच उत्तम रथ को भीष्म, द्रोण तथा पृथ्वी के समस्त शासकों के सामने खड़ा करके कहा— हे पार्थ यहां एकत्र हुए इन कौरवों को देखो. (१.२४-२५)

वहां अर्जुन ने अपने चाचाओं, पितामहों, आचार्यों, मामाओं, भाइयों, पुत्रों, पौत्रों और मित्रों को खड़े हुए देखा. (१.२६)

श्वशुरों, मित्रों और सब बन्धुओं को भी उन दोनों सेनाओं में स्थित देखकर कुन्तीपुत्र अर्जुन का मन करुणा से भर गया और विषाद युक्त होकर उसने यह कहा— हे कृष्ण, युद्ध की इच्छा से उपस्थित इन स्वजनों को देखकर मेरे अंग शिथिल हुए जाते हैं, मुख भी सूख रहा है और मेरे शरीर में कम्पन तथा रोमांच हो रहा है. (१.२७-२९)

मेरे हाथ से गाण्डीव धनुष गिर रहा है और त्वचा जल रही है. मेरा मन भ्रमित सा हो रहा है तथा मैं खड़ा रहने में भी असमर्थ हूं और हे केशव मैं शकुनों को भी विपरीत ही देख रहा हूं. युद्ध में अपने स्वजनों को मार कर कोई कल्याण भी नहीं देखता हूं. (१.३०-३१)

हे कृष्ण, मैं न विजय चाहता हूं और न राज्य तथा न सुखों को ही. हे गोविन्द, हमें ऐसे राज्य से अथवा भोगों से और जीने से भी क्या लाभ है? क्योंकि वे सब लोग, जिनके लिए राज्य, भोग और सुख की इच्छा है, धन और जीवन की आशा त्यागकर युद्ध के लिए खड़े हैं. (१.३२-३३)

हे मधुसूदन कृष्ण, गुरुजन, ताऊओं, चाचाओं, पुत्रों, पितामहों, मामाओं, श्वसुरों, पोतों, सालों तथा अन्य सम्बन्धियों को, मुझपर प्रहार करने पर भी, मैं मारना नहीं चाहता. तीनों लोक के राज्य के लिए भी मैं इन्हें मारना नहीं चाहता, फिर पृथ्वी के राज्य की तो बात ही क्या है ? (१.३४-३५)

हे जनार्दन कृष्ण, धृतराष्ट्र के पुत्रों को मारकर हमें क्या प्रसन्नता होगी? इन आततायियों को मारने से तो हमें केवल पाप ही लगेगा. (१.३६)

इसलिए अपने बान्धवों, धृतराष्ट्र के पुत्रों, को मारना हमारे लिए उचित नहीं है, क्योंकि हे माधव, स्वजनों को मारकर हम कैसे सुखी होंगे? (१.३७)

यद्यपि लोभ से भ्रष्टचित्त हुए ये लोग अपने कुल के नाश से उत्पन्न दोष को और मित्रों से विरोध करने में हुए पाप को नहीं देख रहे हैं; परन्तु हे जनार्दन, कुल के नाश से उत्पन्न दोष को जानने वाले हम लोगों को इस पाप से निवृत्त होने के लिए क्यों नहीं सोचना चाहिए? (१.३८-३९)

कुल के नाश से कुल के सनातन धर्म नष्ट हो जाते हैं, धर्म नष्ट होने पर सारे कुल को पाप दबा लेता है. (१.४०)

हे कृष्ण, पाप के बढ़ जाने से कुल की स्त्रियां दूषित हो जाती हैं; और हे वार्ष्णेय, स्त्रियों के दूषित होने पर वर्णसंकर पैदा होते हैं. (१.४१)

वर्णसंकर कुलघातियों को और सारे कुल को नरक में ले जाता है, क्योंकि (वर्णसंकर द्वारा) श्राद्ध और तर्पण न मिलने से पितर भी अपने स्थान से नीचे गिर जाते हैं. (१.४२)

इन वर्णसंकर पैदा करने वाले दोषों से कुलघातियों के सनातन कुलधर्म और जातिधर्म नष्ट हो जाते हैं. (१.४३)

हे जनार्दन, हमने सुना है कि जिनके कुलधर्म नष्ट हो जाते हैं, उन्हें बहुत समय तक नरक में वास करना होता है. (१.४४)

यह बड़े शोक की बात है कि हम लोग बड़ा भारी पाप करने का निश्चय कर बैठे हैं तथा राज्य और सुख के लोभ से अपने स्वजनों का नाश करने को तैयार हैं. (१.४५)

मेरे लिए अधिक कल्याणकारी होगा यदि शस्त्ररहित और सामना न करने वाले मुझको ये शस्त्रधारी कौरव रण में मार डालें. (१.४६)

संजय बोले— ऐसा कहकर शोकाकुल मन वाला अर्जुन रणभूमि में बाणसहित धनुष का त्याग करके रथ के पिछले भाग में बैठ गया. (१.४७)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥